14 अप्रैल, 2023 को सरूसजाई स्टेडियम, गुवाहाटी में आयोजित रंगाली बिहू समारोह पर माननीय राज्यपाल का अभिभाषण

नमस्कार,

आज रंगाली बिहू के पावन अवसर पर आदरणीय प्रधानमंत्री जी की गरिमामय उपस्थिति से पूरे असमवासियों को अपार हर्ष और गर्व हुआ है। मैं सबसे पहले प्रदेश और प्रदेशवासियों की ओर से माननीय प्रधानमंत्री जी को हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

मित्रों,

हमारा असम, लाल नदी और नीले पहाड़ों से परिपूर्ण एक सुंदर प्रदेश है। इसका पांच हजार वर्ष पुराना इतिहास रहा है। महाभारत कालीन युग में असम के वीर और वीरांगनाओं का उल्लेख मिलता है। सूरज की पहली किरण पड़ने वाले इस भू-भाग के स्थलमार्ग, जलमार्ग और वायुमार्ग के अभूतपूर्व विकास के साथ-साथ शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए युद्ध स्तर पर काम हो रहा है। वर्तमान केंद्र और राज्य सरकार के सामूहिक प्रयासों से पूर्वोत्तर के विकास को नई गति मिली है।

मित्रों,

हमारा असम विभिन्न समुदायों की मिलनभूमि है। सभी ने अपनी सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं, भाषा, साहित्य एवं परंपराओं को अक्षुण्ण रखते हुए सामूहिक रूप से एक "बृहत् असमिया जाति" का निर्माण किया है। यह "बृहत् जाति" ब्रह्मपुत्र और बराक की घाटियों

सहित पहाड़ी क्षेत्रों में रह रहे लोगों के सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी संवाद से सशक्त एवं समृद्ध हुई है।

असम के लोग सदियों से उत्सवप्रिय रहे हैं। यहां अनेक त्योहार और उत्सव मनाए जाते हैं। इनमें बिहू का त्योहार सबसे बड़ा एवं आकर्षक होता है। यह प्रकृति और मनुष्य के बीच नैसर्गिक प्रेम का प्रतीक है। असमिया कैलेण्डर के अनुसार नववर्ष के आगमन की खुशी पर रंगाली बिहू यानी बोहाग बिहू मनाया जाता है। रंगाली बिहू को हम आनंद और खुशहाली के प्रतीक के रूप में मनाते आ रहे हैं। यह छोटे-बड़े हर उम्र के लोगों के मन में एक नई उम्मीद और ऊर्जा का संचार करता है।

असम में मनाए जाने वाले तीनों बिहुओं में "रंगाली बिहू" सबसे मनमोहक व रंगीन होता है। यह असमिया नव-वर्ष के साथ वसंत ऋतु का स्वागत करने के लिए प्रकृति की उदारता से ली गई प्रेरणा से जुड़ा हुआ है। सभी वर्गों के लोग अपने सामाजिक भेदभाव को भुला कर सामूहिकता के साथ रंगाली बिहू की खुशियाँ मनाते हैं। यह त्योहार जन-सामान्य के आपसी प्रेम, एकता और सौहार्द को और अधिक मजबूत करता है।

बिहू मूल रूप से कृषि आधारित त्योहार है। इसलिए कृषक-जीवन की छोटी छोटी खुशियों को सहज भाव से बिहू गीतों में रेखांकित किया जाता

है। फसलों की बुआई से लेकर कटाई तक की तमाम अनुभूतियाँ बिहू गीतों में चित्रित होती हैं।

रंगाली बिहू की मुख्यतः तीन विशेषताएं होती हैं। पहला, यह नई खेती की शुरुआत का प्रतीक है जिसमें खेतों की जुताई और बुआई शामिल है। दूसरा, यह असमिया कैलेंडर के अनुसार नव वर्ष के प्रथम दिन को चिह्नित करता है और तीसरा, यह वसंत ऋतु के प्रारंभ का आभास दिलाया है। मानो प्रकृति स्वयं सज-धज कर धरती पर अपनी सुन्दरता बिखेर रही हो। इस बीच जहां एक ओर हमें नए साल का जश्न मनाने की खुशी होती है, वही दूसरी ओर, पुरानी स्मृतियों को भुलाने का गम भी होता है।

मित्रों,

आज माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति से पूरे असमवासियों को गौरवान्वित किया है। इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी असम की साढ़े तीन करोड़ जनता है। बिहू के अवसर पर माननीय प्रधान मंत्री ने असम को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) समर्पित किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने लाभार्थियों के बीच 1.10 करोड़ "आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना कार्ड" वितरण अभियान की औपचारिक शुरुआत की है। इसके अतिरिक्त, आज उन्होंने असम को और तीन नए मेडिकल कॉलेजों की सौगात दी है, जो ऐतिहासिक ही नहीं, बल्कि अभूतपूर्व है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने IIT

गुवाहाटी में लगभग 600 करोड़ प्रारंभिक निधि की लागत से निर्माण होने वाली "आसाम एडवांस्ड हेल्थकेयर इनोवेशन इंस्टीट्यूट" की आधारशिला भी रखी है। मेरा पूरा विश्वास है कि इस प्रकार के सतत विकास कार्यों से नये भारत के नये असम का निर्माण होगा।

मित्रों,

मैं मानता हूँ कि इस साल का बिहू पूरे असमवासियों के लिए खास बन गया है। मैं सभी "बिहुआ" और "बिहुवती" को हार्दिक बधाई देता हूं, जो असम के कोने-कोने से यहां आए हैं और अपना अति सुंदर बिहू नृत्य प्रस्तुत किया है। बिहू को "गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड" बनाने के लिए आप सभी का आभारी हूं। असम के बिहू को वैश्विक सम्मान दिलाने के लिए मैं मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा और उनकी टीम को धन्यवाद देता हूं।

मैं प्रदेश और प्रदेशवासियों की ओर से माननीय प्रधान मंत्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। आप हमारे प्रेरणा हैं। आपके मार्गदर्शन में पूर्वोत्तर सहित देश का हर कोना विकास कर रहा है।

सभी असमवासियों को रंगाली बिहू की एक बार पुनः बहुत-बहुत बधाई।

धन्यवाद।

जय हिंद।